पाठ्यपुस्तक विश्लेषण



अंग्रेजी की बेहतर पाठ्यपुस्तकें

ज्योत्स्ना लाल

सन् 2005 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) आने के बाद कुछ राज्यों में नई पाठ्यपुस्तकें बनाने की बातचीत आरंभ हुई। नई पाठ्यपुस्तकों की जरूरत इसलिए भी महसूस की गई ताकि वे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के सिद्धान्तों पर खरी उतर सकें। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) ने नई किताबें कई साल पहले बना ली थीं; लेकिन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या आने के आठ साल बाद राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान ने नई पाठ्यपुस्तकें बनाई हैं जो 2013 से स्कूलों में लग गई हैं।

यह समीक्षा राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा अंग्रेजी की नवनिर्मित किताबों की है। इसमें पहली से लेकर आठवीं तक की किताबों को शामिल किया गया है। समीक्षा को तीन भागों में बांटा गया है। पहले भाग में ऐसी बातों को शामिल किया गया है जिसका सरोकार सभी किताबों से है। दूसरा भाग प्राथमिक कक्षा की किताबों की समीक्षा है और तीसरा भाग उच्च प्राथमिक की किताबों की समीक्षा है।

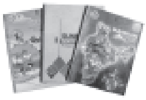
I

सबसे पहले तो यह कहना जरूरी है कि राजस्थान में नई पाठ्यपुस्तकों की सख्त जरूरत थी। बाकी किताबों का तो मैं यहां ज्यादा जिक्र नहीं करना चाहूंगी लेकिन अंग्रेजी की किताबों में तो सुधार की बहुत गुंजाइश थी। नई किताबों में सबसे अच्छी बात यह है कि यह एनसीएफ 2005 के सिद्धान्तों के करीब पहुंचने की कोशिश करती हैं। आमतौर पर पाठ्यपुस्तक के रूप में छापी जाने वाली किताबों और कुंजियों में फर्क करना मुश्किल होता है लेकिन इन किताबों का आकार बड़ा है जिससे इन्हें पाठ्यपुस्तक की स्पष्ट पहचान मिलती है। जहां तक मुझे पता है पुरानी किताबों का आकार और छपाई दोनों ही इतने स्तरहीन और अनाकर्षक थे कि शिक्षार्थियों में अंग्रेजी सीखने की प्रबल चाह के बावजूद उनसे सीखने में कठिनाई होती थी।

नई किताबों में बच्चों को किताब की तरफ आकर्षित करने की मंशा नजर आती है। प्राथमिक कक्षा की किताबों में रंगों का इस्तेमाल काफी हद तक किया गया है; उच्च प्राथमिक कक्षा की किताबों में कम रंगों का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन आकार

लेखक परिचय

लम्बे समय से अनेक स्वयंसेवी संगठनों में कार्य, शैक्षिक शोध में रुचि। संप्रतिः आगा खान फाउण्डेशन, दिल्ली में कार्यरत हैं।



प्राथमिक की किताबों जितना ही है। यह दर्शाता है कि किताब बनाने वालों ने यह स्वीकारा है कि अंग्रेजी राजस्थान की दूसरी भाषा है और आठवीं तक के बच्चों के लिए भी किताब का आकर्षक होना सीखने में सहूलियत प्रदान करता है।

जाहिर है कि किताबें और भी खूबसूरत बनाई जा सकती थीं; लेकिन संभव है इनके निर्माण में बजट की कमी रही हो। हालांकि बजट की कमी की दलील शैक्षिक उपक्रमों के लिए ही क्यों दी जाती है, यह विचारणीय प्रश्न है। बहरहाल, इस बिन्दु पर यहां और बातचीत नहीं करेंगे।

सभी किताबों में एक बड़ा फर्क जो नजर आता है वह है 'शिक्षकों के लिए' पन्ना। यह पन्ना बहुत ही अच्छी तरह से लिखा हुआ है। अगर शिक्षक इसको आत्मसात कर लें तो निश्चय ही उनको अंग्रेजी पढ़ाने में सहूलियत होगी। इसमें भाषा सीखने और सिखाने के सिद्धान्तों को सरल और सटीक तरीके से समझाया गया है।

पहली कक्षा की किताब में इसका केवल हिन्दी में होने का कारण स्पष्ट नहीं है। यदि यह हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में होता और वह भी एक पैरा हिन्दी और ठीक उसी के नीचे वही पैरा अंग्रेजी में तो मुझे लगता कि उससे शिक्षकों को उसके विषय के बारे में अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में पढ़ने का अच्छा मौका मिलता। यह शिक्षकों के लिए भाषा के वयस्क विचार-विमर्श को समझने का मौका प्रदान करता जिससे उन्हें शिक्षण में भी मदद मिलती।

सभी किताबों के पाठों के चयन में सावधानी बरती गई है और यह नजर भी आता है, खासतौर पर उच्च प्राथमिक कक्षा की किताबों में। इन किताबों की कहानियों में भारत और राजस्थान का संदर्भ नजर आता है जिससे ध्यान भाषा सीखने पर रहता है न कि संदर्भ समझने में। साथ ही अंतर्राष्ट्रीय कहानियों की अनदेखी नहीं की गई है।

II

इस भाग में प्राथमिक कक्षा की किताबों पर टिप्पणी है। अगर पहली कक्षा की किताब को ध्यान से देखें तो यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पाठ्यपुस्तक निर्माताओं ने यह माना है कि यहां शिक्षक और छात्रों, दोनों के लिए अंग्रेजी नई भाषा है। छात्रों की तो बात समझ में आती है परन्तु शिक्षकों के बारे में इस मान्यता की वजह समझ में नहीं आती। इन किताबों में शिक्षकों के लिए सुझाव व निर्देश केवल हिन्दी में हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर शिक्षकों को एक से ज्यादा भूमिका निभानी होती हैं और यह मानना की बड़ी कक्षाओं में शिक्षक की भी अंग्रेजी मजबूत हो जाती है, थोड़ी अजीब और अव्यवहारिक बात लगती है। बेहतर यह होता कि प्राथमिक स्तर पर सभी सुझाव या निर्देश दोनों भाषाओं में लिखे होते।

पहली कक्षा की किताब देखने में काफी आकर्षक है - रंगों और चित्रों से भरपूर। इसका सबसे अच्छा पक्ष इसका सरल से कठिन की ओर तथा मौखिक से लिखित की ओर बढ़ना है। किताब न केवल पाठ्यपुस्तक है बल्कि अभ्यास पुस्तिका भी है। इसमें जो फोंट इस्तेमाल किया गया है वह पढ़ने में आसान है।

रेनु और साहिल का सब जगह होना बहुत अच्छा विचार है - इससे लड़के-लड़की में तो समानता नजर आती है। लेकिन राज्य के अन्य अल्पसंख्यक रह जाते हैं। ऐसा भी किया जा सकता है कि प्रत्येक इकाई के लिए अलग-अलग नायक-नायिका का चयन होता। प्रत्येक इकाई के लिए अलग-अलग चित्र चुने गए हैं जिसमें पेज नम्बर लिखे गए हैं लेकिन एक ही पेज पर दो-दो संख्याओं का होना ठीक से समझ नहीं आया।

किताब के पाठ और गतिविधियां बच्चों और शिक्षकों को अंग्रेजी का इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करते हैं और यह एक अच्छी बात है। अगर पाठ की भाषा देखें तो उसमें शब्दों का दोहराव कम है। हम सभी जानते हैं कि शब्दों की पुनरावृत्ति से उन्हें समझ पाना और याद रख पाना आसान होता है और पहली कक्षा में इस तरह के पाठों से बच्चों को भाषा सीखने में आसानी होती है।

किताब के चित्रों के चयन में ध्यान रखा गया है ताकि ग्रामीण और शहरी क्षेत्र- दोनों ही क्षेत्रों के चित्रों का इस्तेमाल किया गया है। चित्रों में कुछ तथ्यात्मक त्रुटियां भी हैं। चित्र पैराकीट का है और उसे तोता लिखा है; नर और मादा कोयल में फर्क होता है। पृ. 71 पर मादा कोयल का चित्र है और पृ. 77 पर नर कोयल का। जिसे ईगल कहा जा रहा है वह काइट है (कक्षा 1, पृ. 71)। उसी किताब के पृ. 73 पर रॉबिन का चित्र है जो कि यूरोप की रॉबिन है जबकि भारतीय रॉबिन देखने में बिलकुल फर्क है। अगर बच्चों को चिड़ियों की जानकारी देनी ही है तो सही होती चाहिए न! इसी किताब में फूलों की जानकारी (पृ. 52) में वही पुरानी समस्या - ब्ल्यू बेल्स! या फिर ऐसे पेड़ जो दिखते दुर्लभ हैं जैसे कि रोहेड़ा। 6 साल के बच्चों को आम दिखने वाले फूलों की सहायता से पढ़ाया जा सकता है, जैसे गुलाब, कमल, चम्पा, सदाबहार, चमेली आदि।

पहली कक्षा से आगे बढ़ें तो जो पहली कक्षा की किताब की अच्छी बातें हैं वे सभी बरकरार हैं - किताबें रंगीन हैं। उनमें एक व्यवस्था नजर आती है, जिस फोंट का इस्तेमाल किया है वह पढ़ने में आसान है और साथ ही पांचवीं तक की किताब पर पहुंचते-पहुंचते छोटा हो जाता है।

तीसरी कक्षा की किताब में कई जगह कठिन शब्दों के अर्थ हिन्दी में दिए गए हैं। यह सही है कि बकेट का अर्थ बाल्टी लिखने से बच्चों को तुरन्त समझ आ जाता है परन्तु भाषा सिखाने में भाषा के ज्यादा से ज्यादा इस्तेमाल से और ज्यादा आसानी होती है! ऐसा करने से ज्यादा अंग्रेजी इस्तेमाल करने के ज्यादा अवसर मिलते।

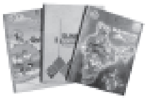
पाठों के अन्त में जो गतिविधियां हैं वह सोच-समझकर बनाई गई हैं और मजेदार हैं। जिन बच्चों के पास इस तरह की वर्कबुक होने की संभावना कम है उनके लिए यह बहुत ही अच्छी हैं। साथ ही शिक्षक चाहें तो इन्हें समूह गतिविधि भी बनाया जा सकता है। इससे बच्चों में अंग्रेजी पढ़ना-लिखना सीखने के अलावा और भी क्षमताओं का विकास होगा जैसे एक-दूसरे की मदद करना, टीम में मिलकर काम करना आदि। समझदार शिक्षक इसे कक्षा प्रबंधन का एक जरूरी हिस्सा बना सकते हैं। हिन्दी भाषी बच्चों को अंग्रेजी शब्दों का उच्चारण सिखाने का प्रयास बहुत अच्छे से किया गया है। इसके अच्छे उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं जैसे 'ee' से 'ई' की आवाज बनती है। हिन्दी भाषी अक्सर इस तरह के उच्चारण में गड़बड़ करते हैं। अतः आरंभ से बच्चे इसे ठीक तरह से सीख पाएंगे।

कई जगह कुछ अजीब-सी विसंगतियां नजर आती हैं, जैसे पाठ 'Our New House' में एक ग्रामीण महिला को बैठक कक्ष के लिए सोफा और 'बेडरूम' के लिए पलंग खरीदते दर्शाया है। यहां संकेत एक शहरी पूर्वाग्रह की तरफ है कि घर तो एक ही प्रकार का होता है। एक पाठ में 'घूघी' बनाना सिखाया गया है जिससे स्थानीय प्रथा को पहचान मिली है।

पांचवीं तक आते-आते भाषा की जटिलता यह मानते हुए बढ़ जाती है कि बच्चे चार-पांच साल से अंग्रेजी सीख रहे हैं। यह उचित भी है। हालांकि सीखने की गति की स्वतंत्रता होनी चाहिए। परन्तु यह पाठ्यपुस्तक निर्माताओं के दायरे से बाहर होकर स्कूल/कक्षा प्रबंधन और शिक्षा दर्शन का मामला है।

किताब की गतिविधियां रोचक हैं। यह भी अपेक्षा की गई है कि बच्चे छोटे-छोटे प्रोजेक्ट करें। किताब फिर से शिक्षक को समूहों में काम करवाने का विचार दे रही है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी यह बहुत अच्छे से हो सकता है। यदि शिक्षक यह माने कि अंग्रेजी सिखाने में किताब से पढ़ाने के अलावा अन्य विधियों का भी उपयोग किया जा सकता है और यह सीखने की प्रक्रिया को मजबूत ही करती है, कमजोर नहीं।

चिंताजनक बात यह लगी कि अंग्रेजी भाषा को महज एक रोजमर्रा के कामकाज की भाषा के रूप में देखा जा रहा है। लगभग सभी किताबों में यह समझ नहीं आ रहा है कि यह अंग्रेजी की किताबें हैं या पर्यावरण अध्ययन की! यह सही है कि भाषा सीखने से अन्य विषय सीखने में मदद मिलती है और अन्य विषयों की समझ से भाषा समृद्ध होती है लेकिन इन किताबों में यह कुछ ज्यादा ही हो गया है। ऐसा लगता है, खासकर तीसरी और पांचवीं की



किताबों में कि पर्यावरण अध्ययन की किताबों की कुछ कहानियां रख दी गई हैं। पांचवीं कक्षा की किताब के एक पाठ में जहां रेखा उदयपुर का जिंक (स्मेलटर) देखने जाती है, ऐसा लगता है कि लेखक समूह बिलकुल भूल गया है कि यह पांचवीं कक्षा की अंग्रेजी की किताब का अंश है! 'मिनरल' का अर्थ 'खनिज' लिख देना पर्याप्त नहीं है। पूरा पाठ कर्म वाच्य (पैसिव वाइस) में लिखा हुआ है और उसका अगला पाठ बिजली पर है! विषयवस्तु से इसका संकेत तो मिलता है परन्तु पाठ पढ़कर लगता है कि भाषा सीखने की प्रक्रिया के साथ थोड़ा अन्याय हो रहा है। सुन्दर कविताएं, मजेदार कहानियां, निरर्थक (नॉनसेन्स) कविताएं भाषा का सौन्दर्य, शब्दों के इतिहास की झलक बहुत हल्की नजर आती है जबकि इस तरह की रचनाएं भाषा सीखने को रोचक बनाती हैं। मुझे लगता है कि अंग्रेजी को केवल रोजमर्रा के कामों की भाषा मानकर उसके सीखने की प्रक्रिया को सीमित करना है।

तीसरी बात जो कुछ पाठकों को खटक सकती है, वह है हिंग्लिश को बढ़ावा देना, भले ही यह बहुत महीन ढंग से किया गया है। पाठों में हिन्दी के शब्द डालकर, शिक्षक के लिए निर्देश हिन्दी में देकर। यह पहले वाले बिन्दु को और मजबूत करता है। अंग्रेजी को केवल एक संप्रेषण के माध्यम के रूप में देखा जा रहा है और किसी भी भाषा को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के लिए यह चिंता का विषय है।

III

इस भाग में उच्च प्राथमिक की किताबों की समीक्षा है। यहां स्पष्ट करना जरूरी हो जाता है कि किताबों की समीक्षा यह मानकर की जा रही है कि छठी कक्षा तक आते-आते बच्चों का अंग्रेजी भाषा के साथ एक रिश्ता बन चुका है और यह भी कि किताबें इस्तेमाल करने वाले बच्चे आराम से अंग्रेजी पढ़-लिख सकते हैं। साथ ही अंग्रेजी सुनकर समझ सकते हैं और थोड़ी बहुत बोल भी सकते हैं। जाहिर है यहां पर सरल स्तर की ही बात की जा रही है।

उच्च प्राथमिक कक्षाओं के लिए तीन किताबें हैं। इन तीनों किताबों का आकार प्राथमिक स्तर की किताबों जितना ही है। लेकिन प्रस्तुतिकरण में समानता यहीं खत्म हो जाती है। तीनों किताबों के आवरण पृष्ठ भी आकर्षक नहीं हैं। खासतौर पर छठी कक्षा का। सभी पर सरकारी स्कूल के बच्चों की तस्वीरें हैं। क्या राजस्थान पाठ्यपुस्तक मण्डल की किताबें केवल सरकारी स्कूलों के लिए हैं? किताबों के आवरण से ऐसा ही प्रतीत होता है। अन्दर खोलें तो भी आकर्षण बढ़ता नहीं है। यह जरूर है कि पुरानी किताबों से तुलना करें तो रंग, छपाई, सफाई, कागज की गुणवत्ता, आकार सभी बेहतर है। सभी किताबों में केवल एक रंग का इस्तेमाल किया गया है। दिक्कत यहां रंगों का अभाव नहीं बल्कि छपाई की गुणवत्ता के प्रति उदासीनता है। किताब को दिखने में आकर्षक बनाने के लिए रंगों की नहीं बल्कि सफाई/लेआउट में रचनात्मकता और सामान्य रेखीय चित्रांकन पर्याप्त हो सकती है। इस पैमाने पर यह किताबें खरी नहीं उतरतीं।

प्राथमिक कक्षा की किताबों की शुरुआत में 'शिक्षकों के लिए' पन्ना था। यह बहुत अच्छी तरह से भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के बारे में समझाता है। उच्च प्राथमिक की किताबों में यह मौजूद नहीं है। हर तीन पाठों की इकाई के बाद शिक्षक के लिए सुझाई गई गतिविधियां हैं। यह अपने-आपमें बहुत अच्छा है लेकिन भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया समझ बढ़ाने के लिए उपयुक्त नहीं है। बेहतर होगा कि किताब के शुरू में प्राक्कथन के रूप में उच्च प्राथमिक पर अंग्रेजी सीखने-सिखाने पर टिप्पणी होती।

सभी किताबों में पाठों की संख्या और संरचना एक जैसी है। तीन पाठ, जिसमें एक कविता शामिल है और इसके बाद शिक्षकों का पन्ना जो उन पाठों को पढ़ाने के लिए सुझाव हैं। सुझाव गतिविधियों, व्याकरण प्रोजेक्ट, भाषा के विकास तथा मूल्यांकन पर आधारित हैं। यदि शिक्षक इन सुझावों को सही तरीके से इस्तेमाल करे तो अंग्रेजी सीखने-सिखाने में निश्चित ही आसानी होगी।

तीनों किताबों की कहानियों का चयन सोच-समझकर किया गया है। कहानियों का स्तर बच्चों की संभावित उम्र के अनुसार है। सबसे अच्छी बात यह है कि राजस्थान के अलावा भारत के अन्य भागों से भी कहानियों का चयन किया

गया है। साथ ही अन्य देशों की संस्कृति का भी परिचय मिलता है, जैसे आठवीं की किताब में हेमिंग्वे या ईरान और दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाएं हैं। उच्च प्राथमिक के बच्चे यह सब ग्रहण करने के लिए आमतौर पर तैयार होते हैं।

पाठ के अंत में जो प्रश्न व अन्य अभ्यास हैं वे सीखने वाले को बार-बार पाठ पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। इससे भाषा सीखने में आसानी होती है।

सभी जगह जहां 'घर' की बात आती है वहां पर हमेशा शहरी घर दिखाया गया है और अगर कोई परी कथा या फंतासी होती है तभी गांव की बात होती है। यह एक पुराना मर्ज है और यहां भी यही बात नजर आती है! मेहमान आए हैं तो उन्हें चाय/कॉफी/जूस के लिए पूछो। एक गांव में पहलवान रहता था। राजा को गरम, फूली ताजा रोटी ही पसंद थी (जो राजस्थान के बहुत सारे मर्दों की भी पसंद है)। यह पूर्वाग्रहों को मजबूत करता है। यह काफी चिंताजनक है और इस पर ध्यान देने की जरूरत है।

कहीं-कहीं भाषा के उपयोग में त्रुटियां हैं। कक्षा 6 की किताब में पृष्ठ संख्या 12 पर 'मे' (May) के स्थान पर 'केन' (Can) का उपयोग किया गया है। यहां सही शब्द सिखाना/इस्तेमाल करना इसलिए जरूरी है क्योंकि यह गलती कई वयस्क भी करते हैं।

बच्चों के स्तर को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग तरह की लेखन शैली से उन्हें रू-ब-रू कराया गया है। कहानी, निबंध, जीवनी, डायरी लेखन और एक जगह कॉमिक भी! इनके चुनाव में एक संतुलन नजर आता है जो किताबों को बेहतर बनाता है।

सभी किताबों के अंत में गद्यांश/कविता हैं जिन्हें शिक्षक को कक्षा में पढ़कर सुनाने हैं। यह बहुत अच्छा कदम है। पहली बार किताबें लिखने, पढ़ने, सुनने, बोलने और समझने सभी पर ध्यान देने के प्रयास कर रही हैं।

कुल मिलाकर देखें तो पिछले दशक में शिक्षा पर चली बहसों के बाद नई पाठ्यपुस्तकों का बनना लाजमी था। खासतौर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 के आने के बाद। इसलिए इस पहल का खुले दिल से स्वागत करना चाहिए।

यूं तो जब भी किताबें बनाई जाती हैं, उसमें कई लोग शामिल होते हैं लेकिन इस बार लगता है कि विशेषज्ञों के चयन में ज्यादा सावधानी बरती गई है। इसका असर सभी किताबों में नजर आता है, खासतौर पर प्राथमिक की किताबों पर। राजस्थान में शायद पहली बार गैर-सरकारी संस्था की मदद राज्य सरकार की किताबें बनाने में ली गई है। यह प्रयोग काफी कारगर सिद्ध हुआ है। किताबों में बहुत-सी अच्छी बातें हैं, कुछ कमियां भी हैं, जिनका उल्लेख किया जा चुका है।

अंग्रेजी सिखाने या शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में एक बाधा अच्छी किताबों का न होना है। नई किताबें इस बाधा को एक हद तक दूर कर देती हैं। इसके बावजूद सबसे बड़ी चुनौती- यानी शिक्षक प्रशिक्षण और अकादमिक समर्थन। इस प्रयास को धरातल पर बेहतर तरीके से लागू करने के लिए समय-समय पर समीक्षा व मॉनिटरिंग करना जो किताबें बनने के बाद शेष है। राजस्थान की सच्चाई यह है कि शिक्षकों की अंग्रेजी का स्तर काफी चिंताजनक है और अंग्रेजी भाषा का उनका अनुभव भी काफी सीमित है। प्रचलित अखबार व टेलीविजन भी एक हद तक ही इस कमी को पूरी कर पाते हैं।

पिछले कुछ सालों से राजस्थान के सरकारी स्कूलों में पैरा-शिक्षक नियुक्त करने की प्रथा चली थी। इन पाठ्यपुस्तकों के इस्तेमाल और बेहतर शिक्षण के लिए इन शिक्षकों की स्वयं की शिक्षा और प्रशिक्षण दोनों में इजाफे की जरूरत है। इस स्थिति में इन नई और बेहतर किताबों का स्वागत है लेकिन सावधानी के साथ कि इनका उपयोग करना सिखाना भी बहुत जरूरी है। वरना यह मेहनत पूरी तरह सार्थक नहीं हो पाएगी। ◆

